समय के बदलाव में फैशन के दौर पर भारतीय पोशाक

Poonam Gosai
Assistant Professor
Department of Home Science
Gopichand Arya Mahila College, Abohar

सृष्टि की रचना के साथ ही मानव जीवन का प्रारंभ हुआ तभी से मनुष्य के जीवन से संबंधित आवश्यकताओं का विशेष रुप से निर्माण हुआ। तभी से यही आवश्यकताएं मनुष्य के जीवन को सरल व सहज बनाती आ रही है, यह आवश्यकताएं रोटी कपड़ा तथा मकान के रूप में सामने आती हैं दिन प्रतिदिन के जीवन को आसान बनाने की चाह में मनुष्य अपनी इच्छाओं को संपूर्णरुप से संतुष्टकरने के लिए विशेष रूप से यतन करता आ रहा है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक मनुष्य के जीवन में अनेकों पड़ावों में बदलाव आया। इस तरह के परिवर्तन में खानपान कपड़े रहन सहन आदि के तरीकों में दिन प्रतिदिन निरंतर बदलाव आता रहा है। यह परिवर्तन समय के अनुसार नए-नए पड़ावों के साथ जुड़ता हुआ मनुष्य जीवन में अपनी पहचान बना रहा है। प्राचीन समय की बात की जाए तो हम यह देखते हैं कि मनुष्य शुरू जीवन में नगन अवस्था में रहता था, उसके बाद उसने वृक्ष के पत्तों के साथ शरीर ढकना प्रारंभ किया। विभिन्न विभिन्न वृक्षों की छालों से प्राप्त रेशों से धागों की खोज की यही धागे आगे चलकर कपड़े को बनाने में कामयाब हुए समय के परिवर्तन के साथ साथ ही मनुष्य जीवन में सामाजिक परिवर्तन आया मौसम के प्रभाव स्वास्थ्य संबंधीएवं अपने आप की सुरक्षा के उद्देश्य को लेकर मनुष्य ने अपना तन ढकना जरूरी समझा इसके साथ-साथ मनुष्य का सामाजिक दायरा जैसे-जैसे बढ़ता गया, वैसे वैसे वस्त्र संबंधीसामाजिक जीवन में बदलाव आया यही बदलाव समय-समय पर सामाजिक स्तर को प्रदर्शित करता रहा वस्त्रों का मनुष्य के जीवन में विशेष महत्व है। इसके बिना जीवन निर्वाह करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती वस्त्रों के इतिहास की जानकारी हमें प्राचीन सभ्यता से ही देखने को मिलती है। अगर हड़प्पा कालीन सभ्यता की बात की जाए तो हमें यह देखने को मिलता है कि इस समय कपास के रेशे प्रचलन में थे, यही रेशे उस समय की जलवायु के अनुकूल थे इसी के साथ साथ अवशेषों में वह सहायक सामग्री भी प्राप्त हुई जिसमें रीलिंग विधि से धागों का निर्माण किया जाता था। भारत में विभिन्न विभिन्न इलाकों की जलवायु संस्कृति धर्म जाति आदि के आधार पर अनेकों प्रकार की विभिन्नताएं देखने को मिलती है इन्हीं विभिन्नताओं के चलते चलते लोगों ने अपने से अलग संस्कृति में वस्त्रों को अपनाया और अपने अपने फैशन के तौर पर चलाया विभिन्न विभिन्न सभ्यताओं में राजा महाराजाओं के समय से लेकर वर्तमान तक वस्त्रों संबंधीअनेकों बदलाव आए अनेकों पहनावे अपने अपने समय में आए तथा चले गए यह बदलाव अलग अलग सभ्यताओं के फैशन को पेश करता हुआ समाजिक सभ्यता को दिखाता है। यह परिवर्तन पुराने समय में केवल उच्च स्तर के लोगों के बीच में ही अधिक लोकप्रिय था परंतु आधुनिक समय में यह परिवर्तन पहले सामान्य लोगों के बीच में चलन में आता है। यह लोगों पर समय के साथ-साथ अपनी पहचान छोड़ता है वर्तमान में पश्चिमी सभ्यता के फैशन का असर लोगों में तेजी से चला आ रहा है। पश्चिमी सभ्यता ने युवा पीढ़ी को बहुत प्रभावित किया तथा विभिन्न विभिन्न राज्यों में इसका प्रचलन दिन प्रतिदिन बढ़ता रहा है। भारत एक ऐसा देश है जहां पर विभिन्न विभिन्न संस्कृतियां बस्ती है। यही

विभिन्न संस्कृतियां विभिन्न विभिन्न राज्यों में अपनी विशेष पहचान रखती हैं भारत देश ऐसा देश है। जहां पर शुरू से ही देश और विदेशों से लोगों का आना जाना लगा रहा है जिससे यह अलग अलग राज्यों विदेशों विदेशियों की संस्कृतियों से प्रभावित होता आ रहा है। वस्त्र की दुनिया में नए-नए प्रकार के प्रयोग होना ऐसी दशा में स्वभाविक ही था। चीन एक ऐसा देश है जहां पर रेशम के कपड़े का एकाधिकार है रेशम कीट से रेशम धागे को बुनकर कपड़े का निर्माण किया जाता है भले ही शुरू में यह विधि गुप्त रूप में रखी गई, परंतु जब इस तकनीक का दूसरे देशों को पता चला तो यह बहुत प्रसिद्ध हुई और धीरे-धीरे एशिया में सार्वजनिक रूप से रेशम के उत्पादन का कार्य बढ़ने लगा। के दशक के दौरान पश्चिमी सभ्यता का असर भारतीय परिधानों पर देखना शुरु हो गया। परंतु उस 1970 स्तुओं को अपनाना असंभव था इसी वजह समय सभी के द्वारा उन वसे नए फैशन स्टाइल का जन्म हुआ इसे फ्यूजन वस्त्र परिधान भी कहा जाता है जिसमें पश्चिमी सभ्यता व भारतीय परिधानों का एक अनूठा संयोग देखने को मिला इसका आज के समय में सबसे अच्छा उदाहरण जींस पर कुर्ती पहनना है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि लोगों के पास पहनने के लिए अब बहु विकल्प थे तथा यह आधुनिकता को दर्शाने वाले थे तथा साथ ही साथ यह आरामदायक थे पुरुषों से ज्यादा महिलाओं के मामले में पश्चिमी परिधानों को बड़े पैमाने पर अपनाया गया क्योंकि महिलाएं पुराने समय की एक ही प्रकार की शैली से बोर होगई थी।

ऐसा नहीं है कि पश्चिमीदेश वस्त्र परिधान में फैशन की दुनिया में हमेशा अग्रणी या आधुनिक ही रहा है क्योंकि द्वितीय विश्व युद्ध के दौर से पहले तक महिलाओं के द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों में कुछ एक नियम निर्धारित किए हुए थे जैसे लॉन्गस्कर्ट जिसकी लंबाई घुटने से नीचे तक होती थी पूरी आस्तीन इत्यादि (बंद गला) हाई नैक , बिल्कुल उसी तरह से जिस तरह भारत में मुगल काल वह राजपूत काल के में महिलाओं को बुर्का वह घूंघट में उस जगह की रहने का या यूं कह सकते हैं कि पर्दे में रहने का एक कड़ा नियम था। किसी विशेष जगह के परिधान संस्कृति को धर्म जाति बंधन जैसी अन्य बातों की तरफ अपने आप ही ध्यान को इंगित करती है।

कहने का अर्थ है यह है कि सिर्फ पहनावे से ही उस व्यक्ति विशेष के बारे में बहुत कुछ जाना जा सकता है शैली आदि का अनुमान बहुत ही सरल संस्कृति के अलावा उसका व्यवसाय जीवन ,जाति ,उस व्यक्ति की धर्म तरीके से लगाया जा सकता है वस्त्र जो कि पहले के समय में एक गहन आवश्यकता के रूप में थी वह आज के समय में जीवन स्तर को प्रदर्शित करती है यहां ऐसा कहना गलत नहीं होगा कि केवल दिखावा मात्र रह गया है और इस फैशन का असर यह प्रभाव महिलाओं में ही नहीं बल्कि पुरुषों में भी बराबरी में देखने को मिलता है साथ ही साथ हर age group में फैशन का प्रभाव अग्रणी है। दुनिया में समय के साथ अनेक प्रकार के प्रयोग हुए हैं जो कि हर युग में अलग,सिंधु घाटी सभ्यता-अलग प्रकार से प्रदर्शित होते हैं जैसे कि- वैदिक काल, मौर्य काल, गुप्त काल, मुगल काल व राजपूत काल।

जैसे कि सिंधु घाटी सभ्यता काल से जानकारी मिलती है कि इस समय के लोग एक पल कपड़े से अपने आप को रखते थे परंतु ज्यादातर उनके शरीर के अंगों के भाग खुले ही होते थे या यूं कहें कि बिना कपड़ों के ही रहा करते थे इस समय में भी अपने आप को सजाने का शौक रखा जाता था लोग अपने आप को विभिन्न तरीके से तैयार करते थे पत्थर हो या अन्य धातुओं से बने आभूषण को भी पहना करतेथे।

वैदिक युग-:

युग में भी ज्यादातर बिना सिले कपड़ों को ही पहना जाता था इस काल में लोग जानवरों की बनी खाल को धारण करते थे इस युग में भी आभूषण पहनने का चलन था पुरुषों में महिलाओं के धारण किए जाने वाले वस्त्र लगभग एक ही प्रकार के होते थे बस फर्क था तो इसे पहनने के तरीके में।

मौर्य काल-:

इस काल में महिलाएं अपने सिर को ढकने के लिए एक तरह का स्कार्फ का इस्तेमाल करती थी तथा गांठ के द्वारा कपड़े को बांधकर पहनने का चलन था।

गुप्तकाल-:

इस युग में सिलाई के साथ कपड़े पहनने का चलन शुरू हुआ इस युग में पहनावेमें बदलाव बहुत हुए सभी लोग सिले हुए कपड़े नहीं पहनते थे क्योंकि सिलाई के कपड़े पहनना रॉयल्टी का प्रतीक माना जाता था इस समय में भी महिलाओं के द्वारा सिद्ध के जाते थे और इस युग में भी पुरुष और महिलाएं अपने आप को विशेष रूप से अपने बालों को फूलों के द्वारा या अन्य आभूषण के द्वारा सजाते थे।

मुगल काल-:

फैशन की दुनिया का मुगल काल एक स्वर्णिम काल के रूप में माना जाता है इस काल में जितना अधिक डिजाइनर कपड़े की शैली पर जितना अधिक ध्यान दिया गया उतना शायद किसी भी युग में ध्यान नहीं दिया गया इस काल में महिलाओं व पुरूषोंमें बराबरी से पहनावे का बदलाव देखने को मिलता है इस युग में भी सभी लोग पूरी तरह से सिलाई किए हुए कपड़े पहनते थे महिलाओं को सिर ढकने बुर्का पहनने का एक कड़ा नियम था।

राजपूत काल-:

किस काल में काफी संतुलित व रॉयल्टी के साथ कपड़ों को पहनने का ढंग था तथा पूरीतरीके से फिटिंग के कपड़े पहने जाते थे तथा महिलाओं के लिए बने वस्त्र भी अजब सौंदर्य के प्रतीक के रूप में पहने जाते थे।

समकालीन -:

आज के समय में फैशन की दुनिया में बहुत से बदलाव इतने दिन देखने को मिलते हैं पहले के समय में सिर्फ महिलाओं के लिए कपड़े का फैशन बदलता था परंतु आधुनिक समय में पुरुषों के लिए भी फैशन की एक नई दुनिया बन गई है जिसमें यू कहा जा सकता है अनेक प्रकार की डिजाइन वस्त्रों में देखने को मिलती है।

आज के समय में लोग चमकदमक को छोड़कर आरामदायक कपड़ों को पहनना ज्यादा पसंद करते हैं-त्व को भी दिखा सके महिलाओं में भारत में ही अलग अलग धर्मों के धर्मों से संस्कृति के लोगों केजो उनके व्यक्ति वस्त्रों को धारण करना शुरू कर दिया जैसे कि अनाख्कलीसूट जो कि मुस्लिम धर्म की महिलाओं के द्वारा पहने जाने वाली एक प्रसिद्ध पोशाक है उसी तरह से सलवार कमीज जो कि पंजाब में सिख समुदाय में महिलाओं के द्वारा पहने जाने वाला परिधान था परंतु आज केसमय लोगों ने इस पहनावे को बड़े पैमाने पर पसंद किया क्योंकि इसमें लोग अधिक आरामदायक महसूस करते हैं इसी तरह लहंगा चोली जो कि गुजरात में राजस्थान में अलम मीटर तक का एक पल कपड़ा होता है जो कि 5.30 से 5:00 से साड़ी जो अलग तरह से पहना जाता है इसी तरह अलग तरीके अपनाए जाते है-मध्य व दक्षिण भारतीयों के द्वारा इसे पहनने के लिए अलग परंतु आज के समय में

सभी भारतीय पोशाक देशसभ्यता विदेश में सब जगह बहुत बड़े पैमाने पर प्रचलित हो रहे हैं जिस तरह से पश्चिमी व भारतीय संस्कृति के मिश्रण से आधुनिक समय में जो फैशन के मामले में फ्यूचर देखने को मिलता है जैसे महिलाओं के कुर्ते में आस्तीन का नाहोना सलवार का रूप ले लेना यह सभी तरीके वास्तव में प्रदेश प्रदर्शित करता है कि मनुष्य किसी भी एक विशेष विधि में बंधकर नहीं रहना चाहता है।

इसी तरह से फैशन का यही रंगढंग आज के युवाओं को काफी बिंदास व आकर्षक व्यक्तित्व प्रदर्शित करता है यह पहनावे में आए सभ बदलाव आगे भी इसी तरह से परिवर्तन की स्थिति को बनाए रखेंगे।

References

1. Admin. "Traditional Dresses and Fashion Culture across different Indian States", *[LisaaDelhi]*, Retrieved 10 May 2018.
2. *"Weaving in Ancient India". Retrieved 5 July 2012.*
3. https://www.researchgate.net/publication/215757088_Traditional_indian_Costumes_andTextiles.
4. Prakash, O. (2005). Cultural History of India. New Delhi: New Age International (P) Limited, Publishers.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com